वर्ष : 14 अंक : 3 जुलाई–सितम्बर 2019

पन्त प्रसार सन्देश

(प्रसार शिक्षा निदेशालय की त्रैमासिक समाचार पत्रिका)
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर–263 145, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

संरक्षकः डा. तेज प्रताप, कुलपति
मुख्य सम्पादकः डा. तेज प्रताप, निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी
सम्पादकः डा. बी. डी. सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान)

कुलपति संदेश

भारतवर्ष की अर्थव्यवस्था प्रारम्भ से ही कृषि पर आधारित रही है तथा आज भी 60 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या अपने जीवीकोपार्जन हेतु प्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। उत्तराखण्ड के कृषक समुदाय को कठिन एवं प्रतिकूल वातावरण में जीवन–यापन करने के लिए दिन–प्रतिदिन अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इन विपरीत परिस्थितियों के बावजूद भी यहां के कृषकों ने अपने परम्परागत ज्ञान एवं अनुभव से न केवल उन चुनौतियों का सामना किया है वरन् प्रगति के पथ पर अपने कदम निरन्तर बढ़ा रहे हैं। कृषि के नवीन तकनीक के व्यापक प्रचार–प्रसार के उद्देश्य से प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा त्रैमासिक पत्रिका "पंत प्रसार सन्देश" का प्रकाशन अत्यन्त प्रशंसनीय एवं स्वागत योग्य कदम है। पत्रिका के जुलाई–सितम्बर, 2019 (अंक 14:3) के माध्यम से विश्वविद्यालय एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों की प्रसार गतिविधियों को आप तक पहुंचाकर हमें अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। वैज्ञानिकों द्वारा किए गए शोध निष्कर्षों को दूरस्थ क्षेत्र एवं जन–जन तक पहुंचाने में प्रसार शिक्षा निदेशालय का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। निदेशालय के अधीन विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित प्रसार कार्यक्रम जैसे प्रशिक्षण, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, ऑन फार्म ट्रॉयल, कृषक–वैज्ञानिक संवाद, किसान मेला, कृषि गोष्ठी इत्यादि द्वारा प्रदेश के सुदूरवर्ती क्षेत्रों में कृषकों की आय वृद्धि करने में महती भूमिका निभा रहे हैं। आशा है कि कृषक नवीन तकनीक के माध्यम से आजीविका एवं स्वरोजगार के क्षेत्र में आशातीत वृद्धि करने में सफल होंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका प्रसार गतिविधियों को और अधिक गतिशील बनाने एवं सुदूर क्षेत्रों तक विस्तारित करने में उपयोगी सिद्ध होगी।

शुभकामनाएँ।

(तेज प्रताप)
कुलपति

106वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का सफल आयोजन

प्रसार शिक्षा निदेशालय के तत्वावधान में 'कृषि कुंभ' के नाम से विख्यात 106वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का भव्य आयोजन सितम्बर 27–30, 2019 को विश्वविद्यालय परिसर में किया गया। किसान मेले का उद्घाटन सितम्बर 27, 2019 को पूर्वाह्न 11.00 बजे मुख्य अतिथि पिथौरागढ़ की प्रगतिशील महिला काश्तकार, श्रीमती रेखा भण्डारी द्वारा अन्य गणमान्य व्यक्तियों, जनप्रतिनिधियों, अधिष्ठातागण, निदेशकगण, वैज्ञानिकों, कर्मचारियों, छात्रों एवं कृषकों की उपस्थिति में गाँधी मैदान में किया गया। मेले के उद्घाटन के बाद मुख्य अतिथि ने मेले का भ्रमण किया और विश्वविद्यालय के महाविद्यालयों, कृषि विज्ञान केंद्रों व विभिन्न फर्मों एवं संस्थानों द्वारा लगाये स्टॉलों पर उत्पादों व तकनीकियों का अवलोकन किया और जानकारी ली। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने गाँधी हॉल में अपने जीवन के अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि आंचल डेयरी की छोटी मात्रा में दूध बेचने की शुरूआत से आज उनके महिला समूहों की ओर से 120 लीटर दूध प्रतिदिन बेचा जा रहा है। खेती में वैज्ञानिकों से हासिल की गई जानकारी के आधार पर उन्नत बीजों और नई तकनीकों के प्रयोग से खेती को और अधिक लाभप्रद बनाया जा सकता है। श्रीमती भण्डारी ने बेमौसमी सब्जी उत्पादन, औषधीय एवं सगंध पौधों की खेती, डेयरी, मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन इत्यादि तकनीक अपना कर कृषि से लाभकारी बनाने का आह्वान किया। उन्होनें कहा कि किसान और वैज्ञानिक का रिश्ता मित्रता का होता है। दोनों को मिलकर कृषि एवं किसान को आगे बढ़ाने की सोच बनानी चाहिए। समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति डा. तेजप्रताप ने कहा कि कृषि अब बदल रही है। यह अब जीवन पद्धति न रहकर अधिक कमाई का मुख्य जरिया बन रही है। जो किसान इस बदलाव को नहीं अपनाएगें वे पीछे रह जाएगें। मेले में हर किसान को कोई न कोई बात सीखकर जानी चाहिए।

किसान मेले का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि

मेले में विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों के साथ–साथ राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के फर्मों ने स्टॉल लगाकर कृषि से सम्बन्धित उत्पादों एवं तकनीकों का प्रदर्शन किया। मेले में अनुसंधान केन्द्रों पर परीक्षणों/प्रदर्शनों का अवलोकन, रबी की फसलों के नवीनतम प्रजातियों के बीज व मिनीकिट की बिक्री, शाक–भाजी एवं फलों के उन्नत बीजों व पौधों की बिक्री, किसानोपयोगी उन्नत तकनीकों की प्रदर्शनी, आधुनिक कृषि यंत्रों की प्रदर्शनी, विश्वविद्यालय प्रकाशनों की रियायती दर पर बिक्री का आयोजन किया गया। वैज्ञानिकों द्वारा प्रत्येक दिवस अपरान्ह में विशेष व्याख्यानमाला तथा कृषकों की समस्याओं के निराकरण हेतु कृषक गोष्ठी का आयोजन किया गया। कृषकों के मनोरंजन हेतु प्रत्येक दिवस सायंकाल सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। मेले के दौरान किसानों की विशेष रूचि विश्वविद्यालय की शोध इकाईयों द्वारा उत्पादित गुणवत्तायुक्त बीजों के क्रय

स्टॉल का निरीक्षण करते हुए मुख्य अतिथि

करने में रही। इसके अलावा मेले में विभिन्न राष्ट्रीयकृत बैंकों एवं बीमा कम्पनियों के स्टॉलों द्वारा कृषकों हेतु ऋण एवं अन्य उपयोगी योजनाओं के बारे में जानकारी दी गई।

किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का समापन सितम्बर 30, 2019 को मुख्य अतिथि प्रगतिशील कृषक श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा द्वारा किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि 70 के दशक में ''अधिक अन्न उपजाओं'' नारे को सफल बनाने के लिए विश्वविद्यालय ने हरित क्रान्ति में सहयोग कर देश को खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाया। उन्होंने कहा कि किसान और विज्ञान का मेल खेतों के लिए मील का पत्थर साबित होगा। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने उच्च गुणवत्तायुक्त बीजों का विकास कर विश्वविद्यालय को विश्व स्तर पर ख्याति दिलाई है।

समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि

समापन समारोह में निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. पी.एन. सिंह द्वारा मेले का संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए बताया गया कि किसान मेले में छोटी–बड़ी कुल 355 फर्मों द्वारा स्टॉल लगाकर विविध उत्पादों एवं तकनीकों का प्रदर्शन किया गया। किसान मेले में भारी संख्या में कृषकों सहित कृषक महिलाओं, विद्यार्थियों एवं अन्य आगन्तुकों द्वारा प्रतिभाग किया गया। इस चार दिवसीय मेले में विश्वविद्यालय के रू. 88 लाख से अधिक मूल्य के बीज/पौधों की बिक्री के साथ निजी फर्मों के स्टॉलों द्वारा कुल करीब 02 करोड़ रूपये के बीजों की बिक्री की गई। समारोह के अन्त में निदेशक शोध, डा. एस.एन. तिवारी ने सभी सम्मानित अतिथियों का धन्यवाद किया।

मेले में प्रगतिशील कृषक सम्मानित

अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा अपने–अपने जनपदों में चयनित 09 प्रगतिशील कृषकों को कृषि के क्षेत्र में अभिनव परिवर्तन लाने एवं उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करने के लिए अतिथियों द्वारा प्रतीक चिन्ह एवं प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया गया। सम्मानित किये गये कृषक श्री केदार दत्त जोशी, ग्राम–ग्वीनाडा मल्ला (चम्पावत)य श्री रघुबीर सिंह, ग्राम–दुधलादयालवाला (हरिद्वार); श्रीमती प्रियंका पाण्डे, ग्राम–कॉटे (पिथौरागढ़); श्रीमती मंजू रावत, ग्राम–लोल्टी, तुंगेश्वर (चमोली)य श्री आनन्द मणि भट्ट, ग्राम–अलचौना, चाँफी (नैनीताल); श्री संजय कुमार, ग्राम–धर्मावाला (देहरादून); श्री शेर सिंह लटवाल, ग्राम–चौसली (अल्मोड़ा); श्री रजत कचुरा, ग्राम–बिन्दुखेड़ा (ऊधमसिंहनगर) एवं श्री बलवीर सिंह रावत, ग्राम–कैंथा (रूद्रप्रयाग) थे।

प्रगतिशील कृषक को सम्मानित करते हुए अतिथिगण

मेले में प्रतिभाग किये फर्मों के प्रतिनिधि सम्मानित

कृषि उद्योग प्रदर्शनी के पुरस्कार वितरण समारोह में अतिथियों द्वारा सर्वोत्तम स्टॉल का पुरस्कार मै. उत्तराखण्ड एग्रो इन्डस्ट्रीज–किच्छा (ऊधमसिंहनगर) तथा सर्वोत्तम प्रदर्शन का पुरस्कार मै. ए.एच. एसोसिएट्स–काशीपुर (ऊधमसिंहनगर) को प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त ऑटोमोबाइल्स, ट्रैक्टर एवं टायर समूह में मै. एम.आर.एफ. लि. –चेन्नई, मै. न्यू हॉलेण्ड ट्रैक्टर्स–नोएडा (उत्तर प्रदेश); पावर टिलर्स, फार्म मशीनरी एवं टूल

पुरस्कार वितरित करते हुए कुलपति

समूह में मै. जय गुरूदेव इन्डस्ट्रीज–रूद्रपुर (ऊधमसिंहनगर), मै. कृषि सेवा केन्द्र–नैनीताल, मै. न्यू कम्पीटेन्ट ट्रैक्टर्स–काशीपुर (ऊधमसिंहनगर), मै. हाई–कोकी इण्डिया लि.–बंगलौर (कर्नाटक)य इरिगेशन, पम्प, मोटर्स एवं कन्ट्रोल समूह में मै. बीसार इंजीनियरिंग्स–रामपुर (उत्तर प्रदेश), मै. अपोलो पाईप्स लि.–नई दिल्ली, मै. फालकॉन ग्लोबल सेल्स प्रा. लि. –कानपुर (उत्तर प्रदेश); फर्टिलाइजर्स समूह में मै. यारा फर्टिलाइजर इण्डिया प्रा. लि.–मेरठ (उत्तर प्रदेश), मै. डी.सी.एम. श्रीराम फर्टिलाइजर्स एवं कैमिकल्स लि.–नई दिल्ली, मै. दयाल फर्टिलाइजर्स–मेरठ (उत्तर प्रदेश); माइक्रो न्यूट्रिएंट एवं बॉयो–फर्टिलाइजर समूह में मै. न्यूट्रिकेयर बॉयो–साईन्स प्रा. लि.–बरेली (उत्तर प्रदेश); पेस्टिसाइडस् एवं बॉयो–पेस्टिसाइडस् समूह में मै. क्रिस्टल क्रॉप प्रोटेक्शन लि.–दिल्लीय एग्रो फोरेस्ट्री, नर्सरी, हर्बल एवं मेडिसिनल प्लान्ट्स् समूह में मै. सैंचुरी पल्प एण्ड पेपर–लालकुआँ (नैनीताल); वेटेरिनरी मेडिसिन्स, एनीमल फीड एवं फीड सप्लीमेन्ट्स समूह में मै. दि हिमालया ड्रग कम्पनी–बंगलौर (कर्नाटक), मै. वीरबैक एनिमल हैल्थ इण्डिया प्रा. लि.–मुम्बई, मै. मैनकाइन्ड फार्मा लि.–दिल्लीय बैंकिंग, हाऊसिंग एवं इन्श्योरेंस समूह में पी.एन.बी.–पंतनगर (ऊधमसिंहनगर)य सीड समूह में मै. नेशनल सीड्स कॉर्पोरेशन लि.–रूद्रपुर (ऊधमसिंहनगर) के स्टॉल को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून)

- सितम्बर 27–30, 2019 तक पंतनगर में आयोजित अखिल भारतीय किसान मेला में केन्द्र द्वारा अपने स्टाल के माध्यम से प्रसार गतिविधियों को प्रदर्शित किया गया। मेला में ग्राम धर्मावाला, विकास खण्ड विकासनगर, देहरादून के प्रगतिशील कृषक श्री संजय कुमार को किसान सम्मान पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- माह अगस्त में हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश से आये 28 कृषकों ने तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया तथा उन्हें फतेहपुर ग्राम में स्वयं सहायता समूह की गतिविधियों से अवगत कराया गया।

- सीड हब परियोजना के अन्तर्गत 10 है. क्षेत्रफल में 17 किसानों को बीजोत्पादन हेतु उर्द प्रजाति पंत उर्द 31 दिया गया।
- अगस्त 16–22, 2019 तक पारथेनियम सप्ताह के अन्तर्गत केन्द्र तथा केन्द्र से बाहर वैज्ञानिकों तथा विभिन्न कालेज के छात्रों को जागरूक करने के साथ–साथ पारथेनियम घास उन्मूलन कार्यक्रम चलाया गया।
- जुलाई, 2019 में केन्द्र द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिनमें 642 कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।
- केन्द्र द्वारा ग्राम भीमावाला में राजमा उत्पादन पर एक वीडियो फिल्म का निर्माण किया गया, जिससे जनपद के अन्य कृषकों को भी राजमा उत्पादित कर अपनी आय को दुगुना करने की दिशा में अग्रसर किया जा सके।
- जुलाई 19, 2019 को निदेशक अटारी, लुधियाना, डा. राजवीर सिंह द्वारा केन्द्र का भ्रमण कर विभिन्न गतिविधियों की जानकारी ली गयी, जिस पर उनके द्वारा सन्तोष व्यक्त किया गया।
- पशुपालन विभाग, उत्तराखण्ड एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी की सहभागिता से क्षेत्रीय विधायक माननीय मुन्ना सिंह चौहान जी की अध्यक्षता एवं निदेशक पशुपालन

प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि

विभाग उत्तराखण्ड की उपस्थिति में सितम्बर 11, 2019 को राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण, खुरपका, मुंहपका, ब्रुसेलोसिस एवं कृत्रिम गर्भाधान दिवस का आयोजन किया गया।

- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद–भारतीय चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी एवं पशुपालन विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जुलाई 07, 2019 को चारा उत्पादन एवं संरक्षण विषयक कार्यशाला में केन्द्र के वैज्ञानिक डा. ए.के. सिंह द्वारा सहभाग किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वालदम (चमोली)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में कृषकों हेतु दुधारू पशुओं के लिए चाराघास प्रबन्धन, वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन, धान, सोयाबीन, उर्द, मंडुवा, सब्जी मटर उत्पादन की उन्नत किसानोपयोगी तकनीकियों व कीट–रोग प्रबन्धन तथा सेब का जैम–चटनी बनाकर मूल्यवर्धन आदि विषयों पर 14 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें 69 पुरूष व 212 महिला कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।
- सितम्बर 11, 2019 को प्रधानमंत्री द्वारा National Animal Disease Control Programme for FMD & Brucellosis and National Artificial Insemination Programme का शुभारम्भ किया गया। उपरोक्त कार्यक्रम का कृषकों को केन्द्र पर सीधा प्रसारण प्रदर्शित किया गया एवं जनपद के पशुपालन विभाग के 03 पशुचिकित्साधिकारी व 03 पशुधन प्रसार अधिकारियों के सहयोग से केन्द्र पर FMD & Brucellosis and National Artificial Insemination Programme की कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में उपस्थित कृषकों/पशुपालकों को FMD & Brucellosis and Artificial Insemination पर विस्तृत जानकारी दी गयी एवं राज्य सरकार की योजनाओं से अवगत कराया गया तथा दुधारू पशुओं से सम्बन्धित कृषकों की समस्याओं/ जिज्ञासाओं का समाधान किया गया।
- विगत त्रैमास में केन्द्र के वैज्ञानिकों/कार्यक्रम सहायकों ने 19 भ्रमण कार्यक्रमों द्वारा 127 कृषकों के प्रक्षेत्रों में केन्द्र द्वारा लगाये गये विभिन्न फसल प्रदर्शनों का भ्रमण कर फसलों से सम्बन्धित कीट–रोग प्रबन्धन पर सुझाव प्रदान किये गये व किसानो की कृषि सम्बन्धी समस्याओ का निराकरण किया गया।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों/कार्यक्रम सहायकों ने सरसों की खेती, धनिया, पालक एवं मेथी की खेती, किसान मेले का उद्देश्य और कृषि विज्ञान केन्द्र की भूमिका तथा पर्वतीय क्षेत्रों में सब्जी मटर की खेती विषय पर आकाशवाणी, देहरादून, डी.डी. किसान, नई दिल्ली एवं न्यूज 18 टी.वी. चैनलों पर कार्यक्रम प्रसारित किया गया।
- सितम्बर 27–30, 2019 के दौरान पंतनगर में आयोजित अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी 2019 में केन्द्र का स्टॉल लगाकर विभिन्न उन्नत कृषि तकनीकों को प्रदर्शित किया गया। स्टॉल पर उपस्थित वैज्ञानिकों द्वारा स्टॉल पर भ्रमण करने वाले कृषकों की कृषि सम्बन्धी जिज्ञासाओं–समस्याओं का समाधान किया गया तथा उन्हें विभिन्न विषयों पर प्रसार साहित्य उपलब्ध कराया गया।
- इस अवधि में केन्द्र के विभिन्न वैज्ञानिकों/कर्मचारियों द्वारा मैनेज, हैदराबाद व प्रसार शिक्षा संस्थान, नीलोखेड़ी (हरियाणा) द्वारा Strategies to linkage farmers in Agro processing industries, Fodder Production & Conservation in UK, Participatory extension approaches for effective technology transfer, Oral presentation on Drudgery reduction विषयों पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रतिभाग किया गया।
- केन्द्र पर चल रही ट्राईबल सब प्लान योजना के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा माह सितम्बर 2019 में जनपद–चमोली के जनजाति बहुल ग्राम–परसारी, विकासखण्ड– जोशीमठ में 50 कृषकों को कृषि में श्रम एवं समय की बचत कर अधिक फसल उत्पादन प्राप्त करने एवं कृषि क्रियाओं में उन्नत कृषि यंत्रों के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से उन्नत कृषि यंत्रों का वितरण किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट (चम्पावत)

- विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा ''पॉलीहाउस में टमाटर में पिन वर्म कीट नियंत्रण'' विषय पर 0.1 है. क्षेत्रफल में 10 कृषकों के प्रक्षेत्रों पर ऑन फार्म ट्रायल लगाये गये। इस कीट के नियंत्रण के लिए क्षतिग्रस्त पत्तियों एवं फलों को तोड़कर नष्ट करवाये गये। तदोपरान्त नीम ऑयल 5 मिली./ली., डाइमेथोएट 30 ई.सी. 1 मिली./लीटर तथा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. की 4 मिली. मात्रा का 10 ली. पानी में घोल बनाकर आवश्यकतानुसार समय–समय पर छिड़काव किया गया, जिसके परिणाम स्वरूप टमाटर की उपज में 25 से 30 प्रतिशत की वृद्धि पाई गई।
- अदरक प्रथम पंक्ति प्रदर्शन में प्रकन्द सड़न रोग विषय पर 20 कृषकों के प्रक्षेत्र पर 1.0 है. क्षेत्रफल में प्रदर्शन लगाया गया, जिसमें कृषकों को बुआई से पूर्व प्रकन्दों को ट्राइकोडरमा 08 ग्राम/ली. पानी की दर से घोल बनाकर उपचारित कराया गया। साथ ही प्रयुक्त किए जाने वाल कम्पोस्ट खाद को भी ट्राइकोडर्मा नामक फंफूदीनाशक से उपचारित किया गया। अगस्त माह में रोग का प्रकोप दिखाई देते ही उपरोक्त जैविक फंफूदीनाशक का 8–10 ग्राम/ली. पानी की दर से घोल बनाकर ट्रेचिंग करायी गयी।
- शिमला मिर्च में सफेद मक्खी, माहू व कजली रोग प्रबन्धन विषय पर 25 कृषकों के प्रक्षेत्र पर 0.25 है. क्षेत्रफल में प्रदर्शन लगाये गये। उपरोक्त समस्या के निदान के लिए सफेद मक्खी एवं माहू कीट का प्रकोप दिखाई देते ही इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. की 4 मिली. मात्रा का 10 ली. पानी में घोल बनाकर आवश्यकतानुसार 2 छिड़काव किये गये। साथ ही साथ कजली रोग के नियंत्रण के लिए कॉपर आक्सीक्लोराइड का 3 ग्राम/ली. पानी की दर से आवश्यकतानुसार छिड़काव किया गया।
- केन्द्र द्वारा ग्रामीण परिवारों की पोषण खाद्य सुरक्षा को बेहतर बनाने तथा महिलाओं में सूक्ष्म पोषण तत्वों की कमी को दूर करने हेतु माह जुलाई, 2019 में कुल 1.0 है. क्षेत्रफल में 50 कृषकों के प्रक्षेत्रों पर पोषण वाटिका पर प्रथम पंक्ति प्रदर्शन लगाये गये।
- केन्द्र द्वारा कृषकों को नवीनतम कृषि तकनीकी जानकारी देने एवं प्रथम पंक्ति प्रदर्शन की तकनीकों के प्रचार–प्रसार हेतु 4 प्रक्षेत्र दिवसों का आयोजन किया गया, जिसमें 96 कृषकों ने कृषि तकनीकी की बारीकियों को सीखा।
- विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा किसानों हेतु फसल सुरक्षा, पशुपालन, मत्स्य पालन, खाद्य प्रसंस्करण एवं कृषि प्रसार विषय पर कुल 10 प्रशिक्षण कराये गये, जिसमें कुल 201 कृषकों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त बेरोजगार युवाओं हेतु मशरूम उत्पादन तथा औद्यानिक फसलों के मूल्य संवर्धन विषय पर कुल 2 प्रशिक्षण आयोजित कर 40 कृषकों को लाभान्वित किया गया।
- केन्द्र द्वारा कुल 6 गोष्ठियों व स्वयं सहायता समूह की बैठकों का आयोजन कर कृषकों व महिलाओं को बेमौसमी खेती को बढ़ावा देने, स्थानीय उत्पादों का मूल्य संवर्धन कर आय बढ़ाने तथा स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाने हेतु कुल 238 कृषकों को प्रेरित किया गया।

- कृषकों की समस्याओं के निदान हेतु वैज्ञानिकों द्वारा कृषकों के प्रक्षेत्रों पर भ्रमण व परस्पर संवाद, समूह वार्तालाप तथा प्रदर्शनों के माध्यम से 41 कार्यक्रम संचालित कर 385 कृषकों को लाभान्वित किया गया।
- केन्द्र द्वारा चलाई जा रही नवीनतम तकनीकों की जानकारी प्राप्त करने हेतु विगत त्रैमास में कुल 6 कृषक समूहों के 91 कृषकों ने केन्द्र का भ्रमण किया तथा उन्नत कृषि तकनीक की जानकारी प्राप्त की।
- केन्द्र द्वारा प्रसारित तकनीकों की जानकारी तथा जनपद व केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही कृषि सम्बन्धी महत्वपूर्ण योजनाओं से कृषकों को अवगत कराने हेतु केन्द्र द्वारा अगस्त व सितम्बर, 2019 में चार दिवसीय 2 कृषि प्रदर्शनियों को आयोजित कर 2742 कृषकों को लाभान्वित किया गया।
- जनपद के रेखीय विभागों व गैर सरकारी संगठनों द्वारा आयोजित विभिन्न कृषि सम्बन्धी कार्यक्रमों में केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा बागवानी, मत्स्य पालन व खाद्य प्रसंस्करण विषय पर कुल 10 व्याख्यान दिये गये।
- अगस्त 05, 2019 को विश्व स्तनपान दिवस का आयोजन कर कुल 34 महिलाओं को स्तनपान से होने वाले फायदे तथा वीनिंग फूड बनाने की तकनीक से अवगत कराया गया।
- अगस्त 08, 2019 को भारत में हरित क्रान्ति के जनक डा.एम.एस. स्वामीनाथन के जन्म दिवस पर केन्द्र परिसर में सामूहिक रूप से वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर केन्द्र परिसर में बांझ, काफल, जामुन, तेजपत्ता की विभिन्न

वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन

प्रजातियों के पौध लगाये गये। वर्तमान में जनपद के कुल 34 प्रगतिशील कृषक व महिलाओं ने पर्यावरण संरक्षण की शपथ ली।

- अगस्त 16–22, 2019 तक ग्राम सुई, डुंगरी, परध्यानी, खैसकान्डे में पार्थेनियम (गाजर घास) उन्मूलन सप्ताह का आयोजन कर किसानों को गाजर घास से होने वाली क्षति व बीमारियों की जानकारी देते हुए 200 कृषकों को जागरूक किया गया।
- सितम्बर 01–07, 2019 तक राष्ट्रीय पोषण सप्ताह का आयोजन किया गया जिसमें 60 महिलाओं को स्वस्थ रहने हेतु खान–पान में सुधार लाने तथा अधिक से अधिक स्थानीय खाद्यों का आहार में प्रयोग करने की सलाह दी गई। कार्यक्रम के दौरान महिलाओं को सब्जी बीजों के किट भी वितरित किये गये।
- केन्द्र पर सितम्बर 11, 2019 को पशु शिविर का आयोजन किया गया तथा कृषकों को खुरपका, मुँहपका व कृमि नाशक दवाईयाँ निःशुल्क वितरित की गई। इसके अतिरिक्त पशुओं में होने वाली विभिन्न बीमारियों व उनके निदान तथा जनपद में पशुपालन सम्बन्धी योजनाओं की जानकारी हेतु एक किसान गोष्ठी का भी आयोजन किया गया जिसमें 134 कृषकों ने प्रतिभाग किया।
- केन्द्र द्वारा सितम्बर 11 से अक्टूबर 02, 2019 तक केन्द्र परिसर एवं आस–पास के गाँव व विद्यालयों में स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें लोगों को प्लास्टिक की थैलियों व प्लास्टिक से बनी अन्य सामग्रियों का प्रयोग न करने तथा आस–पास सफाई रखने की सलाह दी गयी। स्कूलों में सिंगल यूज प्लास्टिक के प्रयोग से बचने के लिए जागरूकता कार्यक्रम के अन्तर्गत वाद प्रतियोगिता व रैलियों का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान कुल 601 कृषकों को जागरूक किया गया।
- विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा टमाटर की हिमसोना व नवीन 2000+, पत्तागोभी की वरूण व टी 621, फूलगोभी की स्नोमिस्टिक प्रजातियों के कुल 12000 पौध तैयार कर प्रगतिशील कृषकों को उपलब्ध कराया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, जाखधार (रूद्रप्रयाग)

- केन्द्र द्वारा राष्ट्रीय पोषण सप्ताह, पार्थेनियम उन्मूलन जागरूकता सप्ताह, स्तनपान जागरूकता सप्ताह, स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम, राष्ट्रीय पशु बीमारी उन्मूलन एवं कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम, वृहद वृक्षारोपण जागरूकता कार्यक्रम, जल शक्ति अभियान, सिंगल यूज प्लास्टिक मुक्त भारत अभियान, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि एवं प्रधानमंत्री किसान मान धन योजना, पशु आरोग्य मेला, विश्व तम्बाकू निषेध दिवस एवं विश्व मधुमक्खी पालन दिवस आदि का आयोजन किया गया।
- राष्ट्रीय पशु बीमारी उन्मूलन एवं कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम का आयोजन सितम्बर 11, 2019 को किया गया, जिसमें माननीय विधायक केदारनाथ विधानसभा श्री मनोज रावत मुख्य अतिथि थे। इस कार्यक्रम में 102 किसान, 9 पशु चिकित्साधिकारी एवं केन्द्र के वैज्ञानिकों ने भाग लिया। इस अवसर पर आयोजित पशु अरोग्य मेले में 27 पशुओं

कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम का आयोजन

(खच्चर, बैल एवं बकरी) का टीकाकरण किया गया एवं 4 गायों में कृत्रिम गर्भाधान भी किया गया। माननीय विधायक जी द्वारा कृषकों को अपने जानवरों की उचित देखभाल करने की सलाह दी गयी एवं समस्त पशु चिकित्साधिकारियों को निर्देशित किया गया कि वे गाँव–गाँव जाकर इस कार्यक्रम को सफल बनायें, जिससे पशुओं में लगने वाली बीमारी जैसे– खुरपका–मुँहपका से पशुओं को बचाया जा सके एवं कृत्रिम गर्भाधान द्वारा पैदा हुई उन्नत नस्ल की मादा पशुओं से अधिक दुग्ध उत्पादन प्राप्त किया जा सके।

- सितम्बर 11, 2019 से प्रत्येक दिन स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य रूप से सिंगल यूज प्लास्टिक मुक्त भारत अभियान के तहत जवाहर नवोदय विद्यालय के साथ मिलकर इस कार्यक्रम का आयोजन आस–पास के गाँवों एवं बाजारों में किया गया। इस कार्यक्रम में ग्रामीण महिलाओं की सक्रिय भागीदारी रही। इस दौरान कृषि विज्ञान केन्द्र में प्रशिक्षण हेतु आने वाले प्रशिक्षणार्थियों को भी प्लास्टिक मुक्त भारत कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी गयी। जवाहर नवोदय विद्यालय के छात्रों द्वारा स्थानीय बाजार से सिंगल यूज प्लास्टिक कूड़े का एकत्रीकरण भी किया गया एवं सभी दुकानदारों से आग्रह किया कि वे आने वाले उपभोक्ताओं को प्लास्टिक के थैले में सामान न दें तथा उन्हें कपड़े का थैला घर से लेकर आने के लिये प्रेरित करें।
- सितम्बर 17, 2019 को वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम ग्राम– त्यूड़ी, बणसू एवं मैखण्डा में आयोजित किया गया, जिसमें 62 कृषकों ने प्रतिभाग किया तथा कृषकों के द्वारा काफल, तेज पत्ता, नीबू, माल्टा, बांज आदि पौधों का वृक्षारोपण किया गया। इस मौके पर केन्द्र परिसर में भी 180 नीबू एवं माल्टा के पौधों का वृक्षारोपण किया गया।
- केन्द्र द्वारा 23 प्रशिक्षण एवं 12.75 है. क्षेत्रफल में प्रथम पंक्ति प्रदर्शन आयोजित किये गये हैं, जिससे क्रमशः 478 एवं 482 कृषकों को लाभान्वित किया गया। पॉलीहाउस में पार्थिनोकार्पिक खीरा, शिमला मिर्च एवं टमाटर की उन्नतशील प्रजातियों का प्रदर्शन लगाया गया है तथा शेड नेट हाउस में अदरक की प्रजाति रियो–डी–जेनेरियो एवं हल्दी की प्रजाति पंत पीताभ के प्रदर्शन लगाये गये हैं, जिसे देखकर कर केन्द्र पर आने वाले कृषक प्रेरणा प्राप्त कर रहे हैं। उक्त अवधि में सोयाबीन, झंगोरा, मंडुवा, अरहर, चौलाई/रामदाना, अदरक, गेंदा, फ्रेंच बीन, हरी मिर्च पर प्रथम पंक्ति प्रदर्शन आयोजित किये गये हैं।
- सितम्बर 14–15, 2019 को केन्द्र पर डा. पी.एन.सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा द्वारा भ्रमण किया गया। अपने भ्रमण के दौरान निदेशक प्रसार शिक्षा ने केन्द्र में खरीफ में चलाये जा रहे प्रसार कार्यक्रमों की समीक्षा की गयी।

कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर)

- केन्द्र पर जुलाई 19, 2019 को कृषि बीज, उर्वरक एवं रसायन विक्रेताओं के लिए नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर एग्रीकल्चर रूरल मैनेजमेंट (मैनेज) द्वारा एक वर्ष का सैल्फ फाईनेन्स डिप्लोमा कोर्स Diploma in Agriculture Extension Services for Input Dealers (DAESI) का विधिवत उद्घाटन किया गया। इस कोर्स में 40 इनपुट डीलर्स द्वारा रजिस्ट्रेशन कराया गया है। डिप्लोमा कोर्स ई. अनिल कुमार, सह निदेशक के निर्देशन में संचालित किया जा रहा है।
- जल शक्ति अभियान के अन्तर्गत ई. अनिल कुमार एवं केन्द्र के अन्य वैज्ञानिक द्वारा केन्द्र एवं जनपद के विभिन्न ग्रामों में कृषक गोष्ठियों का संचालन कर जल संरक्षण पर जागरूकता कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया।
- केन्द्र पर सितम्बर 06, 2019 को तीन नये वैज्ञानिकों डा. अनिल सैनी (पशुपालन), डा. अनिल चन्द्रा (उद्यान) एवं डा. अजय प्रभाकर (सस्य विज्ञान) तथा श्री रमेश पाल (लेखाकार) द्वारा विधिवत् अपना कार्यभार ग्रहण किया गया।
- सितम्बर 11, 2019 से स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम के अन्तर्गत केन्द्र के वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों द्वारा केन्द्र पर एवं विभिन्न ग्रामों में ग्रामीण किसानों के साथ सफाई कार्यक्रम एवं गोष्ठी के माध्यम से अपने आस–पास में स्वच्छता बनाये रखने के लिए लोगों को जागरूक किया गया।
- सितम्बर 11, 2019 को राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण देशव्यापी कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम के अन्तर्गत जिले के पशुपालन विभाग एवं केन्द्र के पशुपालन वैज्ञानिक डा. अनिल सैनी एवं अन्य वैज्ञानिकों के द्वारा कृषक गोष्ठी एवं पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान भी किया गया। इस कार्यक्रम में 108 कृषकों ने प्रतिभाग किया।
- फाउंडेशन फॉर एग्रीकल्चर रिसोर्स मैनेजमेंट एण्ड एनवॉयरमेंट रेमेडिएशन एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, गौतमबुद्धनगर के संयुक्त तत्वावधान में सितम्बर 12–14, 2019 को

जैविक कार्यशाला में प्रतिभाग करते हुए वैज्ञानिकगण

आयोजित किसान मेले एवं जैविक कार्यशाला में केन्द्र के प्रभारी डा. सी. तिवारी एवं वैज्ञानिक डा. अनिल चन्द्रा द्वारा प्रतिभाग किया गया।

- इफ्को एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर द्वारा संयुक्त रूप से केन्द्र पर सितम्बर 17, 2019 को वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान वैज्ञानिकों द्वारा कृषक गोष्ठी के माध्यम से पर्यावरण को स्वच्छ बनाये रखने में वृक्षों के संरक्षण एवं संवर्धन पर जोर दिया गया। कार्यक्रम के अन्त में केन्द्र पर अमरूद, बेल, अंगूर, जामुन और नीबू वर्गीय फल पौधों का रोपण भी किया गया। इस कार्यक्रम में 28 कृषकों, इफ्को के अधिकारी एवं केन्द्र के वैज्ञानिकों ने सहभागिता की।
- गृह वैज्ञानिक डा. प्रतिभा सिंह द्वारा प्रक्षेत्र दिवस के अन्तर्गत ग्राम बन्नाखेड़ा में ग्रामीण महिलाओं को सोयाबीन के परिष्कृत उत्पाद से हलवा बनाने की विधि का प्रदर्शन किया गया।
- केन्द्र के प्रभारी अधिकारी डा. सी. तिवारी एवं वैज्ञानिक डा. अजय प्रभाकर द्वारा धान में लगने वाली बीमारियों पर कृषक प्रक्षेत्र में डायग्नोस्टिक भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- मत्स्य वैज्ञानिक डा. शिव कुमार शर्मा एवं अन्य वैज्ञानिकों द्वारा मछली उत्पादक कृषक के तालाब पर डायग्नोस्टिक भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार)

- केन्द्र द्वारा कुल 16 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें जनपद के 351 किसानों को कृषि एवं सम्बन्धित विषयों पर तकनीकी रूप से सुदृढ़ किया गया। साथ ही अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों में 126 तथा प्रक्षेत्र परीक्षणों में 4 प्रक्षेत्रों पर कृषि एवं सम्बन्धित विषयों पर परीक्षणों का आयोजन किया गया।
- रेखीय विभागों के प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु एक 15 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 24 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया।
- विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा 1 दूरदर्शन वार्ता तथा 2 रेडियो वार्ताओं की रिकार्डिंग कराई गई।
- केन्द्र के तत्वावधान में सितम्बर 09, 2019 को राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम तथा देशव्यापी कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम को

राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम का आयोजन

पशुपालन विभाग, हरिद्वार द्वारा प्रायोजित किया गया। कार्यक्रम में जनपद के प्रगतिशील पशुपालकों ने प्रतिभाग किया। इस राष्ट्रीय कार्यक्रम के शुभारम्भ का मथुरा से सीधा प्रसारण पशुपालकों को दिखाया गया। कार्यक्रम में पशुओं का निःशुल्क टीकाकरण भी किया गया।

- केन्द्र के तत्वावधान में सितम्बर 17, 2019 को वृहत वृक्षारोपण अभियान एवं किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। इफ्को, हरिद्वार द्वारा प्रायोजित इस कार्यक्रम में जनपद के 100 से अधिक प्रगतिशील कृषकों ने प्रतिभाग किया। इस अवसर पर उपस्थित कृषकों को फलदार पौधें भी वितरित किये गये।

कृषि विज्ञान केन्द्र, गैंना–एंचोली (पिथौरागढ़)

- कृषि विज्ञान केन्द्र, गैना–ऐंचोली, पिथौरागढ़ में जुलाई से सितम्बर–2019 में केन्द्र पर 12 प्रशिक्षण सम्पन्न किए गये, जिसमें क्रमशः 243 (पुरूष 137 एवं 106 महिला) कृषक लाभान्वित हुए। ग्रामीण युवाओं हेतु केन्द्र पर 1 प्रशिक्षण आयोजित किया गया, जिसमें कुल 10 (पुरूष 10) ग्रामीण युवाओं को लाभान्वित किया गया। इसके अतिरिक्त केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा बाह्य प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु 2 प्रशिक्षण आयोजित किये गये, जिसके द्वारा 40 (पुरूष 33 एवं 07 महिला) प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा टमाटर में 2.0 है., शिमला मिर्च में 2.0 है., पत्तागोभी में 1.0 है., फ्रासबीन में 1.0 है. क्षेत्रफल में तथा बकरी और मुर्गी पालन पर 10–10 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन किया गया।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा कृषकों के प्रक्षेत्रों पर 46 भ्रमण किए गये, जिसके द्वारा 384 कृषक लाभान्वित हुए। कृषि की नवीनतम तकनीक की जानकारी हेतु केन्द्र पर किसानों द्वारा 93 भ्रमण किये गये, जिसमें 352 किसान लाभान्वित हुए। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा प्रचार–प्रसार हेतु दैनिक समाचार पत्र अमर उजाला व दैनिक जागरण में 3 तकनीकी समाचारों को प्रकाशित किया गया।
- प्रभारी अधिकारी डा. निर्मला भट्ट द्वारा अगस्त 03–05, 2019 को लुधियाना जोन–1 द्वारा आयोजित क्षेत्रीय कार्यशाला गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर में प्रतिभाग किया गया। कृषि विज्ञान केंन्द्रों की वार्षिक क्षेत्रीय कार्यशाला में उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर और पंजाब के कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा प्रतिभाग किया गया। इस कार्यशाला में प्रसार कार्यों के मूल्यांकन के आधार पर कृषि विज्ञान केन्द्र, पिथौरागढ़ को उत्कृष्ट प्रजेंटेशन अवार्ड दिया गया।

क्षेत्रीय कार्यशाला में पुरस्कार प्रदान करते हुए मुख्य अतिथि

- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा अगस्त 16–22, 2019 को पार्थेनियम (गाजर घास) नियंत्रण जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत ग्राम–गैना, मर्सोली, ऐंचोली और कृषि विज्ञान केन्द्र, पिथौरागढ़ में किये गये आयोजनों में उपस्थिति कृषकों को पार्थेनियम के रोकथाम व नियंत्रण से सम्बन्धित जानकारी दी गई।

- मुख्य पशुचिकित्साधिकारी, पिथौरागढ़ द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र में सितम्बर 11, 2019 को पशु आरोग्य मेला–2019 कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें 25 किसानों ने प्रतिभाग किया।

कृषि विज्ञान केन्द्रों की वार्षिक क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन

आई.सी.ए.आर. के जोन–1 के अन्तर्गत आने वाले समस्त कृषि विज्ञान केन्द्रों की वार्षिक क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन अगस्त 03–05, 2019 तक गो0ब0 पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर में किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन डा. तेज प्रताप, कुलपति, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर द्वारा किया गया। उद्घाटन अवसर पर आप द्वारा कृषकों की आय वृद्धि करने हेतु अनेक सलाह देते हुए सभी कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रभारी अधिकारियों से आह्वान किया कि वे उद्देश्य की प्राप्ति हेतु मनोयोग से जुड़े।

क्षेत्रीय कार्यशाला में सम्बोधित करते हुए मा. कुलपति

कार्यशाला में उत्तराखण्ड, पंजाब, हिमाचल प्रदेश एवं जम्मू कश्मीर के कृषि विज्ञान केन्द्रों के प्रभारी अधिकारियों/अध्यक्षों द्वारा वर्ष 2017–18 एवं 2018–19 की प्रगति समीक्षा एवं वर्ष 2019–20 हेतु कार्ययोजना का प्रस्तुतिकरण किया गया। उक्त बैठक में निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–अटारी, लुधियाना, डा. राजवीर सिंह; औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय–भरसार, पौड़ी गढ़वाल के कुलपति, डा. अजीत कुमार कर्नाटक; शैर–ए–कश्मीर विश्वविद्यालय–जम्मू के कुलपति, डा. के.एस. रिसाम; निदेशक विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा, डा. ए. पटनायक एवं उपरोक्त चारों प्रदेशों के अन्तर्गत आने वाले विश्वविद्यालयों के निदेशक प्रसार शिक्षा द्वारा प्रतिभाग किया गया। कार्यशाला का समापन डा. वी.पी. चहल, सहायक महानिदेशक (कृषि प्रसार), आई.सी.ए.आर., नई दिल्ली द्वारा किया गया। पंतनगर विश्वविद्यालय के समस्त अधिष्ठाता एवं विभागाध्यक्ष द्वारा भी उपरोक्त कार्यशाला में प्रतिभाग किया गया।

समेटी-उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड (समेटी–उत्तराखण्ड) राज्य के प्रगतिशील कृषक, फार्म स्कूलों के संचालक, पशुधन प्रसार अधिकारी, मत्स्य निरीक्षक, मत्स्य पालक, प्रसार कर्मी, कृषक सलाहकार समिति (एफ.ए.सी.), विकास खण्ड स्तरीय तकनीकी दल (बी.टी.टी.) एवं ब्लाक तकनीकी प्रबन्धक (बी.टी.एम.) हेतु फसल एवं सब्जियों की जैविक खेती, मुर्गी पालन–एक लाभकारी व्यवसाय, मत्स्य पालन तकनीक, संरक्षित सब्जी उत्पादन, फल एवं सब्जी प्रसंस्करण– एक लाभकारी व्यवसाय, दुग्ध उत्पादन एवं दुधारू पशुओं का प्रबन्धन, फल वृक्षों में समन्वित कीट एवं रोग प्रबन्धन व औद्यानिक फलवृक्षों/सब्जियों एवं औषधीय तथा सगन्ध पादपों के नर्सरी प्रबन्धन पर कुल आठ प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 110 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। प्रशिक्षणों का आयोजन प्रशिक्षण समन्वयक, डा. बी.डी. सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) के मार्गदर्शन में किया गया।

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा आयोजित प्रशिक्षण/भ्रमण

प्रसार शिक्षा निदेशालय के प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा विगत त्रैमास में विभिन्न सरकारी विभागों, स्वयं–सेवी संस्थाओं, निजी एवं सार्वजनिक फर्मों तथा परियोजनाओं द्वारा प्रायोजित कुल 24 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण के विषय पशुधन प्रबन्धन, खरीफ फसलोत्पादन, कृषि विविधीकरण, मुर्गी पालन, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, पशुपोषण, सब्जी उत्पादन एवं तिलहन उत्पादन इत्यादि थे, जिससे कुल 677 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रम डा. एस.के. बंसल, प्राध्यापक एवं प्रभारी प्रशिक्षण के दिशा निर्देशन में सम्पादित किया गया।

एकल खिड़की पद्धति से कृषक सेवा

प्रसार शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक) द्वारा विगत त्रैमास में पंतनगर कृषक हेल्पलाईन (05944–234810, 05944–235580) एवं किसान कॉल सेन्टर (1800–180–1551 टोल फ्री) के माध्यम से किसानों ने कुल 396 प्रश्नों/समस्याओं का समाधान केन्द्र के हेल्प लाईन पर उपस्थित सम्बन्धित विषय के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया। इस अवधि में उत्तराखण्ड एवं अन्य प्रदेशों से कुल 1029 कृषकों ने एटिक पर भ्रमण किया गया, जिन्हें विश्वविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों, विकसित तकनीकियों एवं एटिक के कार्यों व प्रकाशित तकनीकी साहित्य की जानकारी उपलब्ध करायी गयी। विश्वविद्यालय में सितम्बर 27–30, 2019 में आयोजित अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी में एटिक द्वारा अपने स्टॉल के माध्यम से मेले में आगन्तुक कृषकों को रबी मौसम की विभिन्न सब्जियों के बीजों के साथ–साथ गेहूँ, तोरिया, सरसों तथा मसूर के उन्नत बीजों एवं कृषि साहित्य की बिक्री की गयी तथा कृषि की अद्यतन जानकारी उपलब्ध कराई गई। इस अवधि में किसानों एवं अन्य आगन्तुकों द्वारा किसान मेला में केन्द्र के स्टॉल एवं एटिक बिक्री पटल से कुल ₹ 46,845.00 के साहित्य एवं ₹ 2,66,589.00 के सब्जियों के बीजों के साथ–साथ गेहूँ, सरसों, तोरिया एवं मसूर इत्यादि बीजों का क्रय किया गया।

एटिक में बीज क्रय करते नेपाल के कृषक

इनपुट डीलरों हेतु एक वर्षीय डिप्लोमा कोर्स

मैनेज–हैदराबाद एवं प्रसार शिक्षा निदेशालय, पंतनगर द्वारा जनपद–ऊधमसिंहनगर के बीज, रसायन एवं उर्वरक विक्रेताओं हेतु एक वर्षीय डिप्लोमा कोर्स Diploma in Agriculture Extension Services for Input Dealers (DAESI) का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें 40 डीलर पंजीकृत हैं। प्रतिभागियों हेतु प्रत्येक बुधवार को कक्षा लगायी जाती है। यह कोर्स डा. बी.डी. सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) के मार्गदर्शन में संचालित किया जा रहा है।

बीज, उर्वरक एवं रसायन विक्रेताओं का प्रक्षेत्र भ्रमण

गृह विज्ञान महाविद्यालय द्वारा आयोजित प्रशिक्षण/गतिविधियाँ

- डा. अनुपमा पाण्डे, सहायक प्राध्यापिका, गृह विज्ञान प्रसार विभाग ने अगस्त 21–22, 2019 गृह विज्ञान महाविद्यालय, पंतनगर, में आयोजित गोष्ठी "Role of Community Science Education in Rural Development" में कृषि विज्ञान केन्द्रः Powerful Tool for Upliftment of Rural Women विषय पर पेपर प्रस्तुत किया।
- पारिवारिक संसाधन एवं प्रबंधन विभाग में डा. दीपा विनय, डा. अदिती वत्स, डा. सीमा क्वात्रा, डा. सुनीता शर्मा एवं डा. दिव्या सिंह ने गृह विज्ञान महाविद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय गोष्ठी "Role of Community Science in Rural Development" में अगस्त 21–22, 2019 तक प्रतिभाग किया।
- डा. सीमा क्वात्रा, प्राध्यापिका द्वारा आई.सी.ए.आर.– सी.आई.डब्लू.ए. (ICAR CIWA) भुवनेश्वर में आयोजित अखिल भारतीय समन्वित परियोजना– गृह विज्ञान की गोष्ठी में अगस्त 30–31, 2019 तक प्रतिभाग किया।
- डा. दीपा विनय, प्राध्यापिका विभागाध्यक्ष द्वारा एसेसर ओरिन्टेशन प्रोग्राम (AOP), NAAC (National Assessment and Accreditiation Council) की गोष्ठी का आयोजन अगस्त 19, 2019 को किया गया।
- डा. संध्या रानी, सहायक प्रध्यापिका ने ईश्वर सरन पी.जी. कॉलेज, इलाहाबाद द्वारा आयोजित 'ओरन्टिशन प्रोग्राम' में जुलाई 16 से अगस्त 12, 2019 तक प्रतिभाग किया।
- सितम्बर 05, 2019 को गृह विज्ञान महाविद्यालय के खाद्य एवं पोषण विभाग द्वारा शिक्षक दिवस मनाया गया।
- राष्ट्रीय पोषण अभियान के अन्तर्गत पंतनगर विश्वविद्यालय के खाद्य एवं पोषण विभाग, गृह विज्ञान महाविद्यालय में पोषण मेले का आयोजन सितम्बर 14, 2019 को किया गया। मेले का उद्घाटन विश्वविद्यालय के कुलपति डा. तेज प्रताप जी ने किया। पोषण मेले में उत्तराखंड में खाये जाने वाले अनाज, सब्जियों व उनके पौधों की प्रदर्शनी लगायी गई। प्रतियोगिता में विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये गये। इस अवसर पर महिला एवं बाल कल्याण विभाग ऊधमसिंहनगर ने भी स्टाल लगाया तथा लोगों में कुपोषण के प्रति जागरूकता फैलाने का प्रयास किया।

आगामी त्रैमास (अक्टूबर-दिसम्बर, 2019) में कृषकों हेतु महत्वपूर्ण बिन्दु

कृषि हेतु

- आम के बाग में पुष्प गुच्छ रोग की रोकथाम हेतु अक्टूबर माह में नैप्थलीन एसिटिक एसिड (200 पीपीएम) का छिड़काव करें एवं नवम्बर माह में मीली बग से बचाने के लिए वृक्षों पर पालीथीन की 30 से.मी. चौड़ी पटटी गोलाई में बांधकर दोनों सिरों पर ग्रीस लगायें तथा प्रति वृक्ष थालों एवं तनों पर क्लोरपाइरीफॉस 5 प्रतिशत धूल की 200–250 ग्रा. मात्रा का बुरकाव करें।
- आलू, मूली, गाजर, शलजम, लहसुन की बुवाई अक्टूबर माह में करें।
- असिंचित क्षेत्रों में चना, मटर, मसूर की बुवाई अक्टूबर माह के तृतीय सप्ताह तक एवं सिंचित क्षेत्रों में नवम्बर के प्रथम पखवाड़े तक तथा पर्वतीय क्षेत्रों में अक्टूबर से मध्य नवम्बर तक अवश्य कर लें। पर्वतीय क्षेत्रों में अक्टूबर के मध्य से नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक मसूर की बुवाई करें।
- आड़ू, आलू बुखारा एवं खुबानी में जड़ छेदक कीट की रोकथाम हेतु क्लोरपाइरीफॉस (4 मि.ली./10 लीटर पानी में) का घोल बनाकर थालों में सिंचाई करें।
- मैदानी एवं निचले पर्वतीय असिंचित क्षेत्रों में गेहूं की बुवाई अक्टूबर के द्वितीय पखवाड़ें में एवं ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों में अक्टूबर के प्रथम सप्ताह तथा सिंचित क्षेत्रों में नवम्बर में करें।
- अक्टूबर माह में नींबू वर्गीय फल, आंवला, करौदा, कटहल, अमरूद, नाशपाती में रस्ट की रोकथाम हेतु ब्लाइटॉक्स 50 (0.25 प्रतिशत) का छिड़काव करें।
- तोरिया की बुवाई सितम्बर के द्वितीय पखवाड़े से अक्टूबर के प्रथम सप्ताह तथा राई एवं सरसों की बुवाई अक्टूबर के प्रथम पखवाड़े तक अवश्य पूरा कर लें।

पशुपालन एवं अन्य हेतु-

- मत्स्य तालाब में अक्टूबर/नवम्बर माह में खाद व उर्वरक का प्रयोग करें। मछलियों को पर्याप्त मात्रा में परिपूरक आहार दें। अवांछनीय जलीय जीव जन्तुओं को निकालते रहें।
- पशुओं को चर्मरोग से बचाने हेतु सूखे खुरारे का प्रयोग करें।
- मुर्गी घरों के बिछावन को दिन में 2–3 बार पलटते रहें, जिससे वह सूखता रहे।
- मुर्गियों से अधिक अण्डा प्राप्त करने हेतु दिन और रात की कुल रोशनी 16 घण्टे बनाएं रखें। जैसे–जैसे दिन छोटे होते जाएं, रात की रोशनी बढ़ाते जाएं।
- पशुओं के छोटे बच्चों को कृमि रहित करने हेतु पिपराजीन या अन्य दवा चिकित्सक की परामर्श अनुसार दें।
- माह नवम्बर एवं दिसम्बर में पशुओं को ठण्ड से बचाव हेतु पशुशाला पर पर्दे लगायें। अक्टूबर एवं नवम्बर माह में भैंस गर्मी में आती है अतः ध्यान दें। गाभिन भैंसों को अधिक खनिज लवण दें।

प्रसार शिक्षा निदेशालय के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न वाह्य आयोजनों/बैठकों में प्रतिभाग

- डा. पी.एन. सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा एवं डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक सस्य विज्ञान एवं प्रभारी अधिकारी, एटिक द्वारा जुलाई 10–11, 2019 तक जनपद–चमोली में एक अतिरिक्त कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना हेतु पूर्व में चिन्हित राजकीय आलू बीज उत्पादन केन्द्र, कोटी के जोशीमठ स्थित राजकीय उद्यान, परसारी (औली) का भ्रमण किया गया।
- जुलाई 20–21, 2019 को जनपद–पिथौरागढ़ में एक अतिरिक्त कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना हेतु विकासखण्ड–डीडीहाट के चिन्हित राजकीय उद्यान प्रक्षेत्र, सानदेव एवं राजकीय उद्यान प्रक्षेत्र, थल के भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा गठित स्थल चयन समिति के अध्यक्ष डा. पी.एल. गौत्तम, पूर्व कुलपति पंत कृषि विश्वविद्यालय के साथ डा. तेज प्रताप, कुलपति पंत कृषि विश्वविद्यालय, डा. पी.एन. सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा तथा डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक सस्य विज्ञान द्वारा भ्रमण किया गया।
- डा. पी.एन. सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा द्वारा अगस्त 13, 2019 को कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल) एवं जैव प्रौद्योगिकी केन्द्र, पटवाडांगर के अनुश्रवण एवं प्रसार कार्यों की समीक्षा बैठक में प्रतिभाग किया गया।
- डा. पी.एन. सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा द्वारा अगस्त 21, 2019 को उत्तराखण्ड प्रशासनिक अकादमी, नैनीताल में नये प्रशिक्षुओं के प्रशिक्षण सम्बन्धी बैठक में प्रतिभाग किया गया।
- डा. पी.एन. सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा द्वारा अगस्त 30, 2019 को अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजनाओं तथा कृषि विज्ञान केन्द्रों में कार्यरत् कार्मिकों के सेवा/वेतन/समायोजन, आदि विभिन्न प्रकरणों के सम्बन्ध में सचिव, कृषि विभाग, उत्तराखण्ड शासन के सचिवालय में आहूत बैठक में प्रतिभाग किया गया।
- डा. पी.एन. सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा द्वारा जनपद इलाहाबाद में एक अतिरिक्त कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना हेतु गठित स्थल चयन समिति के साथ प्रतिभाग किया गया।
- डा. पी.एन. सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा द्वारा सितम्बर 14, 2019 को कृषि विज्ञान केन्द्र, जाखधार (रूद्रप्रयाग) के प्रसार कार्यों के अनुश्रवण एवं प्रसार कार्यों की समीक्षा हेतु प्रतिभाग किया गया।
- डा. पी.एन. सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा द्वारा सितम्बर 18, 2019 को सचिव, कृषि, उत्तराखण्ड शासन की अध्यक्षता में आहूत बैठक में प्रतिभाग किया गया।

निदेशक की कलम से

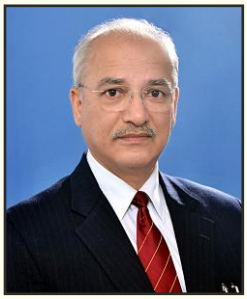

भारत का सत्ताइसवां राज्य उत्तराखण्ड प्राकृतिक वन सम्पदा की दृष्टि से एक धनी राज्य है, जहाँ की दो तिहाई आबादी कृषि पर आधारित है। राज्य में लगभग 12.50 प्रतिशत कृषि भूमि है, जिसका फैलाव ऊँची पहाड़ियों से लेकर भावर, तराई के मैदानी क्षेत्रों तक है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कृषि जोत का आकार दिन–प्रतिदिन कम होता जा रहा है। इसको दृष्टिगत रखते हुए कृषि हेतु उपलब्ध सीमित भू–भाग में बेहतर उत्पादन के लिए लाभकारी कृषि व्यवसायों को बढ़ावा दिया जा रहा है।

उत्तराखण्ड की पहाडियों और कुमायूँ के तराई क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की लगभग 33 वनस्पति प्रजातियां ऐसी हैं, जिनके रेशों को वस्त्र निर्माण एवं अन्य उपयोगों में लाया जा सकता है। कृषि आधारित रेशों का वस्त्र उद्योग में उपयोग बहुत पुराने समय से होता चला आ रहा है, लोगों द्वारा आज भी पुराने तरीकों से पेड़–पौधों से रेशा निकालकर उनका उपयोग विभिन्न प्रकार के वस्त्रों/उत्पादों को तैयार करने में किया जा रहा है।

विदेशी उपभोक्ता प्राकृतिक रूप से तैयार इन उत्पादों को अधिक कीमत पर भी खरीदने को तैयार रहते हैं। इसे देखते हुए यह निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि यदि कृषि आधारित वस्तुओं का मूल्यवर्धन करके प्राकृतिक वस्त्र, कई सजावटी वस्तुए जैसे बैग, पर्स, मैट्स, वॉल हैंगिंग, डलिया, टोकरी, पेन होल्डर, हैट, दरी, चटाई इत्यादि बनाई जाए तो निश्चित ही उनसे अच्छा लाभ अर्जन किया जा सकता है। हमें वस्त्रों के अपारम्परिक स्रोतों की ओर भी ध्यान देना आवश्यक है। इनका उपयोग हमारी वस्त्र सम्बन्धी माँगों को तो पूरा करेगा ही, साथ ही यह लोगो को रोजगार दिलाने में तथा राष्ट्रीय आय बढ़ाने में अपना बहुमूल्य योगदान देगा। इसके रेशों से बने कपड़ों की माँग को बढ़ावा देकर हम कृत्रिम धागों से होने वाले पर्यावरण प्रदूषण की समस्या को भी कम कर सकेंगे।

प्रसार शिक्षा निदेशालय की प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई, कृषि प्रौद्योगिक सूचना केन्द्र एवं प्रसार शिक्षा निदेशालय में स्थापित राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड (समेटी–उत्तराखण्ड) भी इस तकनीकी हस्तान्तरण एवं क्षमता व कौशल का निर्माण करने में अपना बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं।

विश्वविद्यालय स्तर पर राज्य के 09 जनपदों में कार्यरत कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा प्रदेश के सुदूर पर्वतीय क्षेत्रों में रेशों को प्राप्त करने वाली पौधों की प्रमुख प्रजातियों के गुणवत्तायुक्त उत्पादन की उन्नत तकनीकियों से कृषकों को अवगत कराया जा सकता है।

उत्तराखण्ड में कृषि जोत का छोटा आकार एवं सिंचाई सुविधाएं सीमित होने के बावजूद भीत्रझड़ी–बूटी उत्पादन, फल उत्पादन, बेमौसमी सब्जी उत्पादन, पुष्प उत्पादन, मौन पालन, पशु पालन, मुर्गी पालन, मत्स्य पालन द्वारा कृषक अपनी आजीविका को वर्ष दर वर्ष बेहतर कर रहे हैं। सभी प्रसार वैज्ञानिकों से यह अपेक्षा है कि वे प्रदेश के कृषकों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में अपना बहुमूल्य योगदान देगें, व उत्तराखण्ड को खाद्यान्न के साथ–साथ अन्य क्षेत्रों में भी आत्मनिर्भर बनाएंगे।

इस प्रसार पुस्तिका को तैयार करने हेतु बहुमूल्य जानकारियां एवं सामग्री उपलब्ध कराने के लिए लेखकों का आभार प्रकट करता हूँ और आशा करता हूँ कि यह पुस्तिका कृषकों एवं प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु उपयोगी सन्दर्भ साहित्य का कार्य करेगी।

(तेज प्रताप)
निदेशक प्रसार शिक्षा

सम्पर्क सूत्र :– डा0 तेज प्रताप, निदेशक प्रसार शिक्षा, गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड), ☎ 05944–233336 (कार्यालय), 233664 (निवास), Email-dee_gbpuat@rediffmail.com

विश्वविद्यालय हेल्प लाइन दूरभाष सं0 05944–234810, किसान कॉल सेन्टर निःशुल्क दूरभाष सं0 1800–180–1551

दृश्य यात्रा

106वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी की झलकियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं भ्रमण कार्यक्रमों की झलकियाँ

मुद्रक : विश्वविद्यालय मुद्रणालय, पन्तनगर